बी.ए. भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
सप्तम-पत्र
'भाषा का उपयोग'

रोमेश कुमार यादव
हिंदी-विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर-बिहार

भाषा का उपयोग'-

भाषा के अनेकविध उपयोग हैं। उसे ठीक से समझने के लिये उन स्थितियों को जान लेना अच्छा होगा जिनमें भाषा का प्रयोग हुआ करता है। भाषा के प्रयोग की तीन प्रधान स्थितियाँ हैं। 1- व्यक्ति - स्वयं 2- व्यक्ति - व्यक्ति
3. व्यक्ति - समाज

1- व्यक्ति-स्वयं -

हमने देखा है कि भाषा सामाजिक वस्तु है अर्थात् उसका उपयोग सामाजिक सहयोग के लिए होता है। किन्तु भाषा का एक मात्र सामाजिक पक्ष ही नहीं है, सामाजिक के साथ उसका वैयक्तिक उपयोग भी है।

क) भाषण का, या यों कहें कि भाषा का, प्रयोग साधन न होकर साध्य भी हो सकता है अर्थात् भाषण भाषण के आनन्द के लिए, बोलना बोलने के लिए। निरुद्देश्य बोलने का भी अपना आनन्द है और यह प्रवृत्ति व्यापक रूप मे देखी जाती है। बच्चों का निरर्थक जल्पन तो प्रसिद्ध ही है मगर सयाने भी उससे मुक्त नहीं हैं। बच्चा जब किसी गुड़ियां या कुत्ता-बिल्ली जैसे पालतू पशुओं से बातें करता है तो उसका सामाजिक पक्ष क्या है? बच्चा अपने-आप भी बा-बा-बा या मा-मा-मा बोलता रहता है।

निश्चय ही इसके पीछे सामाजिक सहयोग की कोई भावना नहीं होती है और न वह राजनीति या अर्थ-नीति की समस्या सुलझाना चाहता है।

स्नानागार के अनेक गायकों से आपको परिचय होगा जो स्नानागार में जहाँ किसी के सुनने की सम्भावना नहीं है, सुर में या बेसुरे बड़ी मस्ती में राग अलापते हैं और जैसे ही किसी के पैरों की आहट मिलती है, वैसे ही उनकी तान टूट जाती है। स्वगत-भाषण या एकान्त-संगीत की यह विशेषता है कि वह किसी दूसरे के ताकने या सुनने की सम्भावना-मात्र से बन्द हो जाता है।

(ख) बहुत बार भय आदि की भावना दूर करने के लिए मनुष्य भाषा का प्रयोग करता है। इस स्थिति में कोई श्रोता नहीं होता। जैसे - अन्धेरे में निर्जन मार्ग पर जाते हुए जब कभी हृदय में भय का संचार है तो मनुष्य जोर से गाने लगता है। भीतर से भयभीत होने पर भी ऊपर से वह अपनी निर्भीकता प्रदर्शित करना चाहता है और ऐसा करने के लिए वह गीत (भाषा) का सहारा लेता है। जाड़े में बहुतों को स्नान के समय आपने जोर-जोर से 'सीताराम, सीताराम' या कोई मन्त्र जपते सुना होगा।

(ग) कुछ सोचने या किसी समस्या को सुलझाने के लिए भी स्वगत-भाषण चलता है। एकान्त में हिसाब करते समय बहुतों को जोर-जोर से

बोलते आपने सुना होगा; जैसे "पाँच-तीन= आठ + तीन ग्यारह + पाँच सोलह एक सत्रह का सात, हाथ में रहा एक; दो सात नौ तीन बारह का दो, हाथ में रहा एक; इस योग को मन में भी किया जा सकता था, मगर बोलकर करना अधिक सुविधाजनक है।

इसी तरह यदि कोई इन्जीनियर किसी मकान का नक्शा बना रहा है या लम्बाई-चौड़ाई ठीक कर रहा है तो वह अक्सर बोलकर वैसा करता है; जैसे, यदि कमरे की दीवार एक फ़ुट और बढ़ा दें तो कमरा बड़ा हो जाता है। पर डाइनिंग हॉल और किचेन छोटा हो जायेगा... अच्छा बरामदे की ओर एक फ़ुट बढ़ चले तो क्या हानि है? मगर तब दरवाजा बगल में पड़ जाता है...।" इस तरह काफ़ी देर तक वह अपने ऊहापोह को उच्च स्वर में व्यक्त करता हुआ नक्शे की रेखाएँ खींचता है। एकान्त-भाषण की यह स्थिति पर्याप्त व्यापक है जो कवि, कलाकार, दार्शनिक से लेकर साधारण व्यक्ति तक में पायी जाती है।

इन कतिपय उदाहरणों से स्पष्ट है कि भाषा का प्रयोग सदा सामाजिक उद्देश्यों की सिद्धि के लिए ही नहीं होता।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव।